

शिव कुमार दीपक

हाथरस, उत्तर प्रदेश

दोहा

भूल गए मां-बाप को, पूजे देव गणेश ।
संतति से भी मिल रहा, हमें वही संदेश ।।-1

पत्थर पूजे, माँ नही, दिए पिता को दोष ।
'दीपक' पूजे जीवते, मिला आत्म सन्तोष ।।-2

बूढ़ी माँ का पुत्र ने, रखा न कोई ख्याल ।
देवी माँ का जागरण, किया साल-दर-साल ।।-3

सुने नही माँ-बाप की, करे न उनका मान ।
कब करते उसका भला, कावड़ या रमजान ।।-4

पति की लम्बी उम्र को, रक्खे व्रत हर बार ।
दशवीं करवाचौथ पर, मरे स्वस्थ भरतार ।।-5

पति की लम्बी उम्र को, रक्खे थे उपवास ।
यदि व्यसनों को रोकती, होते सफल प्रयास ।।-6

जैसा जिसका कर्म है, वैसा मिले इनाम ।
अशुभ हमेशा ही रहे,व्यसनों के परिणाम ।।-7

जलते दीपक ज्ञान के, मन में भरें उजास ।
कण कण में हो रोशनी, मिटे अंधविश्वास ।।-8

दौरा में कल्लू मरा, आँखें, बाह ततेर ।
लोग गाँव के कह रहे, लड़ा भूत से शेर ।।-9

शिक्षा मानव का करे, सर्वांगीण विकास ।
बिन शिक्षा,बिन ज्ञान के, बढ़े अंधविश्वास ।।-10

बलि को बकरा, मेमना, मुर्गा, सूअर, ढोर ।
शेर न देवों ने चुना, चुने जीव कमज़ोर ।।-11

खिला रहे हैं गोद में, घर में बिल्ली, श्वान ।
छुवे नही इंसान से,---कैसे हैं इंसान ।।-12

बिल्ली घर में रो रही, इत-उत मारे पैर ।
अम्मा बोली राम जी, रखना सबकी खैर ।।-13

राह काट बिल्ली गई, चलने लगा 'सचान' ।
दादा बोले रुक जरा, अशुभ हुआ प्रस्थान ।।-14

हार मिले हर बार में, मेहनत के दौरान ।
गए अंधविश्वास में, फिर शिक्षित इंसान ।।-15

गुड़िया में शैतान है, मूरत में भगवान ।
कैसी दुनिया बाबरी, खुद से ही अंजान ।।-16

राह काट बिल्ली गई, खड़ा हुआ 'आयोग' ।
दुनिया की रफ्तार में , कहाँ टिकेंगे लोग ।।-17

जन्मे थे जिस देश में, नये-नये अवतार ।
शिक्षा के युग में रुका, देवों का विस्तार ।।-18

जहाँ अशिक्षा, दीनता, डर है वहीं अपार ।
वहीं अंधविश्वास भी, बैठा पांव पसार ।।-19

रोज द्वार पर रो रहे, जोर-जोर से श्वान ।
अम्मा बोली मौत अब,लेगी किसके प्रान ।।-20

गर्दन में लटका रहे , राम और हनुमान ।
चाल-चलन से दिख रहे,रावण की संतान ।।-21

दादा को दौरा पड़ा , गए मौत से हार ।
लोग गाँव के कह रहे , दिया भूत ने मार ।।-22